INDEX

NAME : Vikas Thakran COLLEGE : ____________ SEC : ________ Roll No. : 1613094

S. No.	Date	Title	Page No.	Teacher's Remarks/Sign.
1.		योजना विधि का अर्थ	1	
2.		योजना विधि के चरण	2	
3.		योजना विधि के गुण व दोष	5	
4.		नाटक का अर्थ	9	
5.		नाटक के प्रकार	10	
6.		नाटक का शिक्षा मे महत्व	13	
7.		नाटक - मटका और बुद्धि	16	
8.		कला का अर्थ	19	
9.		ललित कला	20	
10.		दृश्य कला	20	
11.		कला का महत्व	29	
12		दृश्य कला के प्रकार	33	
13.		दृश्य कला का शिक्षा में महत्व.	38	

PROJECT METHOD

भूमिका :- योजना विधि प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन डी-वी के विचारो की देन है। जिसे शिक्षा के अंदर प्रयोजनपद के नाम से भी जाना जाता है।

W.H Kilpatrick के अनुसार "योजना एक उद्देश्य पूर्ण कार्य है। जिसे मन लगाकर समाजिक वातावरण में पूरा किया जाता है।

J.S stenvenson के अनुसार "योजना किसी भी समस्या को हल करने के लिए किया जाने वाला कार्य है जो कि स्वाभिक परिस्थितियों में पूरा किया जाता है।

→ इन परिभाषों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकालते है कि योजना मे ऐसे कार्यों को लिया जाता है जो विद्यालय के अंदर स्वभाविक परिस्थियों में मन लगाकर पूरे किये जाते है। और इसके द्वारा बालक की जीवन प्रतिदिन की समस्याओ को हल करने में अथवा उन्हें जीवन उपयोगी शिक्षा देने में सहायता मिलती है।

योजना के सोपान

↓

परिस्थिति प्रदान करना

↓

योजना का चुनाव

↓

योजना का नियोजन

↓

योजना का क्रियान्वयन

↓

योजना का मूल्यांकन

↓

योजना का लेखा जोखा रखना

योजना के चरण

योजना के 6 चरण होते है जिनका वर्णन इस प्रकार है।

1. **परिस्थिति प्रदान करना :-**

योजना मे कार्य करने तथा शिक्षण अधिगम अनुभव प्रदान करने के लिए योजना को चुना जाता है। उसके लिए परिस्थितियाँ पैदा करना, इस सोपान का उद्देश्य होता है। परिस्थितियाँ, वाद विवाद आयोजन भ्रमण और सैर सपाटे पर ले जाने व कक्षा पढ़ाते समय भौतिक व सामाजिक वातावरण मे जीवन उपयोगी क्रियाओं को करते समय शिक्षक के द्वारा अपने ढंग से पैदा कर दी जाती है।

2. **योजना का चुनाव :-**

अपनी समस्या के समाधान के लिए विद्यार्थियों द्वारा कई प्रकार की योजनाएं सामने रखी जा सकती है। इस पर चर्चा की जाती है। और सोच विचार कर ऐसी योजना पर आगे काम करने की सहमति बना ली जाती है।

University Roll No. ....   Page No. 5

असफलता मिली विभिन्न पहलुओं के बारे में विचार करने योजना संबंधी कार्यों का उचित मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया जाता है। इस तरह मूल्यांकन काफी उपयोगी सिद्ध होता है।

6. **योजना का लेखा-जोखा रखना :-**
योजना के प्रथम सोपना से पंचम सोपान तक जो कुछ भी घटित होता है। उससे सम्बंधित किया जाता है ताकि कार्यों का वास्तविक मूल्यांकन और भविष्य मे उसे शिक्षा ग्रहण करने मे आसानी हो। इसमे कार्यान्वियन की विभिन्न क्रियाएं तथा मूल्यांकन करते समय दृष्टिगोचर हुई त्रुटियों का भी रिकार्ड रखना चाहिए।

योजना विधि गुण निम्न लिखित है :-

1. मनोवैज्ञानिक विधि :-
यह विधि मनोवैज्ञानिक नियमों के अनुकूल है। इसमे शिक्षण के लिए जो भी उपविषय चुना जाता है वह बालको की रूचि, योग्यता को ध्यान में रखकर किया जाता है।

2. श्रम का महत्व स्थापित करना :-
योजना में कार्य को पुरा करने के लिए हाथ से कार्य किया जाता है।

3. समाजिक गुणों के विकास में सहायक :-
इस विधि द्वारा बालकों में बहुत से समाजिक गुण विकसित किए जाते है।

4. रटने की प्रवृति को निरूत्साहित करना :-
योजना में समस्या का समाधान विद्यार्थी द्वारा स्वयं अपने प्रयत्नों को ही करने का प्रशिक्षण मिलता है।

5. प्रजातान्त्रिक जीवन यापन का प्रशिक्षण :-
यह विधि प्रजातान्त्रिक ढंग से जीवन यापन

करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कुशलताओं एवं अभिवृत्तियों के विकास में सहायक सिद्ध होती है।

6. **क्रियात्मक एवं व्यवहारात्मक ढंग से ज्ञान प्राप्ति :-**
ज्ञान तभी उपयोगी सिद्ध होता है जब इसको क्रियात्मक एवं व्यवहारात्मक ढंग से प्राप्त किया जाए।

7. **अनुशासन, गृह कार्य की समस्याओं से मुक्ति :-**
इससे वास्तविक परिस्थितियों में योजना पर कार्य करने के दौरान शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है।

योजना विधि के दोष निम्नलिखित हैं :-

1. **क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ज्ञान प्राप्ति में सहायक न होना :-**
इस विधि व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध शिक्षण का इसमें कोई प्रावधान नहीं है। बच्चे जो भी ज्ञान प्राप्त करते हैं। वह उन्हें टूकडों में ही प्राप्त होता है।

2. **खर्चीली :-**
योजना पर कार्य करने के विभिन्न उपकरण साधन तथा सामग्री इन तीनों की आवश्यकता होती है। और इनमें समय, धन और शक्ति तीनों खर्च होते हैं।

3. **शिक्षकों के लिए कठिनाई :-**
इस विधि का उपयोग करते समय अध्यापक के सामने बहुत सी कठिनाईयाँ आती हैं।

4. **पाठ्यक्रम समय से समाप्त करने में कठिनाई :-**
योजना विधि का जब उपयोग किया जाता है तो प्रोजेक्ट को पूरा करने मे काफी समय लगता है।

University Roll No. .... Page No. 8

5. **विद्यालय कार्य का अव्यवस्थित हो जाना :-**

इस विधि पर जब विद्यार्थी कार्य करते है तो विद्यालय का नियमित टाइमटेबल व पाठ्यक्रम क्रियाएँ आदि का आयोजन नहीं हो पाता है।

6. **वर्तमान परिस्थितियो में अनुपयुक्त :-**

यह विधि वर्तमान परिस्थितियों में उपयुक्त नहीं है। क्योंकि विद्यायल की कक्षाओं में विद्यार्थी की संख्या बहुत अधिक है।

नाटक (DRAMA)

नाटक की उत्पत्ति :-

नाटक की उत्पत्ति नट धातु से मानी जाती है। 'नट' धातु का उपयोग अनुकरण के रूप में किया जाता है। हिंदी भाषा मे नाट्य शब्द का प्रयोग नाटक तथा रूपक के लिखे किया जाता है।

नाटक का अर्थ :-

नाटक वस्तुतः रूपक का एक भेद है। रूप का आरोप होने के कारण नाटक को रूपक कहा गया है। अभिनय के समय नट पर दुष्यन्त या राम का आरोप किया जाता है। इसलिए इसे रूपक कहते है। नट (अभिनेता) से सम्बन्ध होने के कारण इसे नाटक कहते है। नाटक में ऐतिहासिक पात्र की शारिरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है। आज नाटक शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'ड्रामा' तथा 'प्ले' का पर्याय बन गया है।

नाट्य-कला :-

नाट्य कला को अभिनय द्वारा प्रदर्शित

DRAMA

Creative Confidence

HOUSTON ART CAR PARADE

2015

University Roll No. ....

किया जाता है। अभिनय द्वारा किसी तथ्य बात, कथा, घटना, कहानी तथा सन्देश को प्रकाशित करना ही 'नाट्य' कहलाता है। नाट्य-कला को कलाओं में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

नाटक के प्रकार (TYPES OF DRAMA)

नाटक के कई रूप होते हैं। उसमें से मुख्य नाटकों का वर्णन इस प्रकार है।

1. **आशु रचना :-**
एक दृश्य स्क्रिप्ट छात्रों की या अध्यापक को दी जाती है। तथा वे उसे कम समय पे तैयार करके कक्षा के सामने प्रदर्शित करते हैं। या भूमिका निभाते हैं।

2. **वार्तालाप विधि :-**
छात्रों को एक विशेष भूमिका निभाने के लिए दी जाती है। (पटकथा में) रिहर्सल के बाद छात्र अपनी भूमिका को स्कूल या माता-पिता के सामने करते हैं।

3. **नकल पूर्ण :-** बच्चे केवल चेहरे का भाव

और शरीर की भाषा का उपयोग कर कक्षा के बाकी बच्चों के लिए रिक्लिप्त संदेश परपारित करते हैं।

4. नकाबपोश ड्रामा :-

इसमें मास्क मुख्य सहारा होता है। बच्चे कम हिचकिचाते हैं। व अच्छी प्रतिक्रिया करने लगते हैं। जब वो इस तरह के नाटक में भाग लेते हैं। बच्चों को अपनी आवाज का प्रयोग करके विषयक की व्याख्या करनी होती है।

5. कठपुतली नाटक :-

बच्चे ड्रामा के इस रूप में कठपुतली का प्रयोग करते हैं। बच्चे कठपुतली को प्रयोग से वो सब कहते व करते हैं जो करने में उन्हें सामान्य रूप से हिचकिचाहट होती है।

6. प्रदर्शन काव्य :-

बच्चे कविता का पाठ करते हैं, और उन्हें कविता में से कहानी को बाहर प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

7. **रेडियो नाटक :-**

रेडियो नाटक मे आवाज का महत्व पूर्ण स्थान होता है। इस तरह से की भूमिका में ध्वनि प्रभाव के अलावा मानसीक चित्र की पेटिंग भी महत्वपूर्ण होती है।

नाटक के घटक या तत्व

नाटक के घटक :-

नाटक के मुख्य घटक या तत्व निम्न प्रकार है।

1. कथा वस्तु
2. संरचना
3. पात्र
4. उपलब्ध सामग्री
5. प्रस्तुतीकरण स्थल
6. प्रस्तुतीकरण

University Roll No. ....

किया जाता है, तो उसको अंत में नैतिक मूल्य भी स्पष्ट किया जाता है। जिससे छात्रों में शिक्षा मिलती है।

1. भावि भविष्य के प्रति सचेत :-

विद्यार्थियों द्वारा नाटक में अभिनय करने पर उनमें हिचकिचाहट की भावना कम हो जाती है तथा उन्हें अपनी गलतियों का भी आभास हो जाता है। तथा वे उन गलतियों को भविष्य में दोबारा नहीं करते हैं।

University Roll No. ....

अकबर – मुस्कुराने लगे। उन्होंने बीरबल को बुलवाया और कार्य उसे सौंप दिया।

बीरबल – बादशाह, मुझे बीस दीन का समय दीजिए।

बीरबल ने एक मिट्टी का मटका लिया और उसे कद्दू के फूल में उल्टा लटका दिया। घड़े में रस्सी का फंदा फसाकर उसे नजदीक के पेड़ की शाखा से लटका लिया। जिससे कद्दू मटके के अंदर उगे। इसी तरह इसने कई मिट्टी के मटके उल्टे करके कद्दू के फूलों में वे लगा दिए।

(बीस दिन बाद)

बीरबल फिर से अकबर के सामने हाजिर हुए। उस समय श्रीलंका के राजा का दूत भी हाजिर था।

University Roll No. ....

बीरबल - यह आपके लिए है। इन मटको मे बुद्धि भरी है। परंतु याद रखे की हमारे बहु-मुल्य मटको को बिना तोड़े हुए और इन बुद्धि के फलो को बिना काटे निकाला जाए। दूत यह सब देख व सुन रहा था।

दूत - (मटको को देखकर भौंचका रह गया)

दरबार में भी सभी लोगो ने अपने दाँतो तले उंगली दबा ली।

दूत मन ही मन सोचने लगा की वास्तव में बीरबल जैसा बुद्धिमान व्यक्ति कोई दूसरा नही है। हमने बेकार में ही अपनी खिल्ली उड़वाई।

The ART of Education

ART (कला)

कला का अर्थ :-

कला शब्द 'कल' धातु से बना है। कला का शाब्दिक अर्थ है - सुंदर अर्थात जो आनंद उत्पन्न करती है। अथवा जिससे सुन्दरता आती है। वह कला है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कला से तात्पर्य रेखा, संगीत, कविता एवं साहित्य के रूप में मानव की प्रवृत्तियों की बाह्य अभिव्यक्ति है, विद्वानों ने तो यहाँ तक कह दिया है,

कला सत्यम, शिवम और सुन्दरम की अभिव्यक्ति है।

कला का क्षेत्र :-

भारतीय दार्शनिकों ने कला को दो ही रूपों में स्वीकार किया है।

1. ललित कला :-

इसके अन्तर्गत संगीत, काव्यकला, चित्रकला एवं वास्तुकला को रखा गया है।

2. **उपयोगी कला :-**
इसके अन्तर्गत इसानुघाति और शेष सभी ज्ञान और कौशल की कलाएँ आती है।

ललित कला (FINE ART)

ललित कला :- पश्चिमी युरोपीय शैक्षिक परंपराओं में ललित कला को मुख्यत ! कला सौन्दर्य शास्त्र सुन्दरता और व्यावहारिक समाशेह में प्रयोग करने के लिए विकासीत किया गया है।

ऐतिहासिक दृष्टि से ललित कला मुख्य पाँच प्रकार की है।

1. चित्रकला
2. मुर्तिकला
3. वास्तुकला
4. संगीत
5. कविता

इसके अतिरिक्त ललित कला को आमतौर पर इन रूपों में भी शामिल किया गया है।

University Roll No. .... Page No. 22

प्रागैतिहासिक चित्रों की विशेषताएँ

1. जीवन की झलक 2. पृष्ठभूमि 3. दृश्य, आकार तथा रंगों का संयोजन 4. आखेट दृश्य 5. पशु चित्रण 6. पक्षी चित्रण 7. मानव चित्रण 8. धनुर्धर एवं अन्य योद्धा 9. नृत्य वादन 10. पूजा प्रतीक

2. **मूर्तिकला :-** किसी भी ठोस पदार्थ की लम्बाई किसी भी यन्त्र से चौड़ाई और मोटाई के अनुसार उसको रूप प्रदान करता मूर्तिकला कहलाती है। मूर्तिकला में हम जो रूप सृजित करते हैं। वह वास्तविक रूप से त्रिआयामी रूप होता है। जबकि चित्रकला में द्विआयामी धरातल त्रिआयामी रूप का भ्रम पैदा करता है।

मूर्तिकला के रूप :- मूर्तिकला निम्नलिखित रूपों में पायी जाती है।

1. **वास्तविक रूप :-** वास्तविक रूपों की रचना करना।

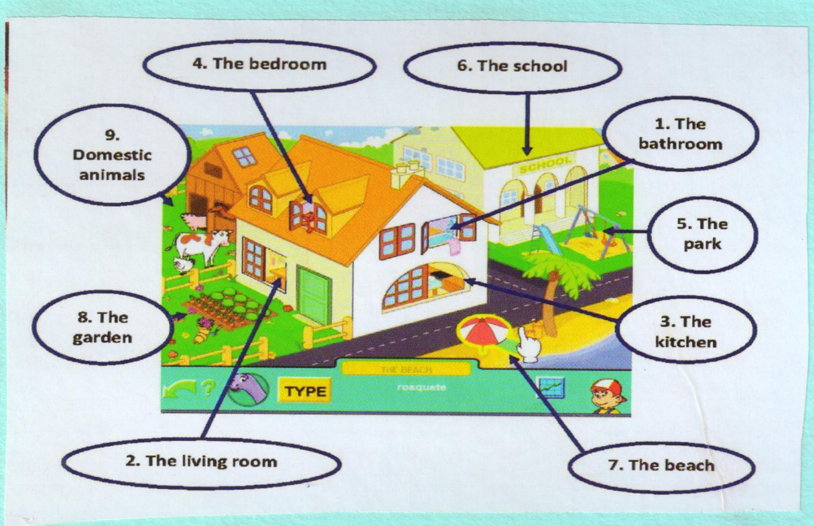
4. The bedroom
6. The school
9. Domestic animals
1. The bathroom
SCHOOL
5. The park
8. The garden
3. The kitchen
TYPE
2. The living room
7. The beach

2. **काल्पनिक रूप व आधुनिक रूप :-**
इसमें कल्पना के आधार पर ठोस रूप सृजित किए जाते हैं। और आधुनिक रूप में पुरी तरह से ऐसे रूपों की ठोस रचना है। जिसमें सृजक द्वारा परिकल्पना, संवेदनशीलता एवं सौन्दर्यता को अवास्तविक तरीके से बनाया जाता है।

3. **धार्मिक और भावनात्मक रूप :-**
इसमें धर्म और से सम्बंधित रूपों का सृजन किया जाता है।

वास्तुकला (Architect Act)
वास्तुकला भी सृजनात्मक कला है। क्योंकि कलाकार भी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्र होता है। प्रसीद्ध शिल्पी किसी भी बड़े भवन का प्रारूप स्वयं तैयार करते हैं। और उसके ही ऐसा रूप सृजित करते हैं। जिसमें सौन्दर्यात्मक रूप निखर आता है। इस प्रकार वास्तुकला भी सृजनात्मक कला है। इसे स्थापत्य कला के नाम से भी जाना जाता है। स्थापत्य कला में विशाल रूपों का सृजन होता रहा है, आज भी स्थापत्य

के सृजन रूपों में ताजमहल, फतेहपुर सीकरी का मकबरा और अत्याधुनिक इमारतें आदि स्थापत्य कला की उच्चकोटि के सृजन है।

4. संगीत (Music) :-

संगीत का सम्बन्ध ध्वनि अथवा आवाज से होता है। ध्वनि दो प्रकार की होती है -1) मधुर 2) कर्कश। संगीत का सम्बन्ध मधुर ध्वनि से है। मधुर ध्वनि वह है जो कानों को सुनने में अच्छी लगती है। तथा जिसको सुनकर प्रसन्नता होती है। संगीत मधुर स्वरों की वह रचना है। जो मन को मोह लेती है। इसे ही संगीत कहा जाता है।

संगीत के विविध रूप :-

1. शास्त्रीय संगीत 2. सुगम संगीत 3. चित्रपट संगीत

5. कविता :-

इसमें कवि अपने मन के भावों को लयात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। कवि मन के दृश्य या प्राकृतिक सौंदर्य आदि

को कविता के माध्यम से व्यक्त करता है। काव्य सौंदर्य बढ़ाने के लिए वह अलंकारों व मुहावरों का प्रयोग भी करता है।

6. फिल्म :-

ललित कला फिल्म वह फिल्म है। जिसमें गतिशील पिक्चर्स (तस्वीर) को प्रदर्शित किया जाता है। फिल्म थियेटर एक ऐसा स्थल है। जहाँ पर लोग फिल्म देखने के लिए जाते है। फिल्म कैमरों से रिकार्डिंग व छवियों द्वारा बनाई जाती है। इसमें विशेष तकनीकी व एनीमेशन का प्रयोग कर आकर्षक बनाया जाता है।

7. फोटोग्राफी :-

फाइन आर्ट फोटोग्राफी तस्वीरें कलाकार की रचनात्मक दृष्टि को दर्शाने के लिए बनाई गई है। फोटोग्राफी मे कहानियों और विचारों को डिजिटल मिडिया के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। ललित कला फोटोग्राफी मुख्य रूप से कलाकार की दृष्टि की अभिव्यक्त

करने के लिए बनाई गई है। लेकिन यह भी तरक्की के कुछ कार्यों में प्रयोग आई है।

8. **वैचारिक कला :-**

वैचारिक कला वह कला है। जिसमें अवधारणा व विचारों को पारंपरिक सौंदर्य और सामग्री के रूप मे प्रयोग किया जाता है। विचारो व अवधारणाओं पर गहराई से चिन्तन किया जाता है।

9. **सुलेख :-**

सुलेख एक प्रकार की दृश्य कला है। इसे प्रायः फैंसी अभीलेख की कला कहा जाता है। सुलेख की सामान्य परिभाषा यह हो सकती है। "एक अर्थपूर्ण सामंजस्यपूर्ण और कुशल तरीके से संकेत देने की कला है"।

10. **मुद्रण (Print making) :-**

मुद्रण द्वारा कला कृतियां सामान्य रूप से कागज पर बनाई जाती है। Monotyping को छोड़कर यह

University Roll No. .... Page No. 27

प्रक्रिया सभी तरह के गुणज उत्पादित करने मे सक्षम है। इसे प्रिंट कहा जाता है। हर एक प्रिंट की एक प्रतिलीपि वास्तविक होती है। और हम आज इसी तरह की प्रतिलिपि मूल होती है। प्रिंट द्वारा हम कुछ नया था नमें तरीको के नही उत्पादित कर सकते है। सिर्फ मूल तथ्य की वैसी ही प्रतिलिपियाँ उत्पादित कर सकते है। प्रिंट भी एक मूल दस्तावेज है। जिसे तकनीकी रूप में मैट्रिक्स के नाम से जाना जाता है।

कला की प्रशंसा

कला की सराहना :-

कला की प्रशंसा पाठ्यक्रम चित्रकला मुर्तिकला वास्तुकला और डिजाइन के तत्वों का सर्वेक्षण है। इतिहास अतीत की कला और वर्तमान पाठ्यक्रम के डिजाइन ने विद्यार्थियों को पहचान बनाने मुल्याकन करने और कला के विभिन्न रूपो व शैलियो को समझने योग्य बनाया है। इस पाठ्यक्रम ने कला के क्षेत्र में कैरियर के अवसरों की खोज की है।

Science
Art
It is in your nature to follow one of these two paths.
You will do one of these for the rest of your life. Go now in your chosen direction.

"कला ही जीवन है" अर्थात कला व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती है। जब मानव का व्यक्तिगत जीवन कला से प्रभावित होता है। तो सामाजिक जीवन में परिवर्तन आवश्यक है। कला एक क्रिया है। जो व्यवहारिक या उपयोगी मूल्यों के अतिरिक्त कलाकार को और उन व्यक्तियों को जो उसके कार्य में दर्शक श्रोता अथवा सहयोगी के रूप में इसे ग्रहण करते हैं। सन्तुष्टि प्रदान करते हैं। कला का सम्बन्ध हृदय तथा प्रकृति दोनों से होता है। जब एक गायक संगीत की रचना करता है। तो वह अपने हृदय के अनुभव अथवा बोध को ही व्यक्त करता है जिससे उसे आत्मिक संतोष होता है।

कला का महत्व (Importance of Art)

कला का महत्व :

कला का महत्व निम्न प्रकार है

1. कला व्यक्ति के जीवन का सृजनात्मक का विकास करती है।
2. कला अपने देश का क्षेत्र संस्कृति एवं सभ्यता का विकास करके उसे संरक्षण प्रदान करती है।

3. कला हस्त कौशल के विकास मे सहायक होती है। जिससे स्वतंत्रता विचार, स्पष्टता एवं शुद्धता का बोध होता है।

4. कला सम्प्रेषण का कार्य करती है। जिससे एकता एवं सहयोग की भावना विकास होता है। और सामाजीक भावना विकासित होती है।

5. लोक कला द्वारा मानवीय मुल्यो का विकास होता है। जिससे सामाजिकता एवं नैतिकता उत्पन्न होती है। कला हमारी संस्कृति एवं

6. प्रकाती का चित्रण करती है। जिससे व्यक्तियों मे समाजिकता का विकास होता है।

7. कला के माध्यम से व्यक्ति अपने स्वतन्त्र भावो की आत्मिक अभिव्यक्ति कर सकता है।

8. कला सौन्दर्यानुभूति आनन्दायक एवं मानासिक अभिव्यक्ति है।

कला का शिक्षा में महत्व

कला का शिक्षा में महत्व :- शिक्षा में कलाओ के उपयोग आवश्यकता महत्व एवं उद्देश्यो को निम्नलिखित रूप मे स्पष्ट किया जा सकता है।

University Roll No. .... Page No. 30

1. मानसिक शक्तियों का विकास :-

कला - शिक्षण द्वारा मानसिक शक्तियों के विकास, कल्पना - शक्ति, स्मृति - शक्ति, निरीक्षण शक्ति, स्वतन्त्र, चिन्तन - शक्ति, ज्ञानकरण शक्ति तथा आत्मनिर्णय - शक्ति जैसी महत्वपूर्ण शक्तियों के समुचित प्रकार को विकसित करना चाहिए।

2. बौद्धिक विकास :-

बौद्धिक शक्ति का विकास करने के लिए अनुभव प्रधान होता है। कला के माध्यम से यदि अनुभव प्राप्त किया जाए तो बौद्धिक विकास सरलता से हो जाता है। कला 'स्वयं करके सीखने' के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।

3. शारीरिक विकास :-

कला के माध्यम से शिक्षा में श्रम के मूल्य को आँकने की क्षमता विद्यार्थियों में विकसित की जाती है।

4. चरित्र - निर्माण :-

एक विद्वान ने कहा है, "अर्थात कला The purpose of art is to pure

~~and~~ Emotion का उद्देश्य हमारी भावनाओं को शुद्ध करना है।

5. **आत्मिक विकास :-**

कला आत्म-परिष्कृति का एक उत्तम माध्यम है। कला का शिक्षण आत्म-शोधन एवं उच्च लक्ष्य प्राप्ति में अपूर्व सहयोग प्रदान करता है।

6. **व्यक्तित्व निर्माण :-**

कला के पाठ्यक्रम का संयोजन करते समय इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी में एकता हो कला शिक्षण के साथ-साथ व्यक्तित्व के निर्माण की रुचि भी जाग्रत हो।

7. **सामाजिकता का विकास :-**

कला शिक्षण का उद्देश्य मनुष्य के अन्दर सामाजिकता का विकास करना होना चाहिए।

8. **नैतिकता का विकास :-**

कला नैतिकता प्रदान करने में समाजिकता मान्यताओं का सहाया

लेती है। हमारी संस्कृति एवं कला का उद्देश्य नैतिकता की दिशा में मार्गदर्शित करना है।

9. **व्यवसाय का आधार :-** कला को जीवित रखने के लिए कला-शिक्षण के साथ यह उद्देश्य निहित होना चाहिए कि कला व्यक्ति को व्यवसाय भी नियत करती है।

10. **दार्शनिकता :-** कला 'जीने की कला है।" कला शिक्षण में इस दार्शनिकता के उद्देश्य को समिलित करना चाहिए।

University Roll No. .... Page No. 33

दृश्य या रूपप्रद कला (VISUAL ART)

दृश्य कला :-

शाब्दिक अर्थ देखा जाए तो रूपप्रद का अर्थ है। रूप प्रदान करने वाला। अतः कलाओं के परिप्रेक्षण में दृश्य या रूपप्रद कला का अर्थ है। कि वे कलाएं जिनमें किसी भी पदार्थ को ऐसा रूप प्रदान किया जाए जिससे मूल पदार्थ अपना अस्तित्व खोकर अन्य रूप में ही समाहित हो जाए। जैसे मिट्टी से कबूतर की आकृति बनाने पर मिट्टी का अस्तित्व कबूतर की आकृति में विलीन हो जाता है।

आज की दृश्य कला अनुकरण तथा परम्परा में विश्वास नहीं रखती बल्कि व्यक्तिवादी एवं अन्तर्मुखी है। इसमें कलाकार समाज का ध्यान न रखकर अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, विचारों और उच्चकोटि की परिकल्पनाओं पर अधिक ध्यान देता है। जिस प्रकार कहा जा सकता है। कि कला कला के लिए है। न कि समाज के लिए।

आधुनिक काल में शिक्षक की छात्रों के

लिये इस प्रकार की दृश्य कला का ज्ञान देना होगा। जिससे समाज को सुसंस्कृत बना सके। कला स्वयं के लिए न होकर समाज के लिये सुख और शान्ति प्रदान कर सके। दृश्य कला में सौन्दर्य का बोध - स्वतन्त्र अभिव्यक्ति और परिकल्पनाओं का होना महत्वपूर्ण है।

चित्रकारी (Drawing)

चित्रकला को क्रियात्मी कलाओं कला का व्यवस्थित रूप चित्रकला है। व्यावहारिक तथा व्यापारिक दोनों में आज कला में चित्रकला का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसी कारण फोटोग्राफी विज्ञान कला, कपड़ी आदि का डिजाइन कपड़ों की रंगाई कपड़ों की छपाई कढ़ाई बुनाई एवं पुस्तक के प्रकाशन में चित्रकला का उपयोग कर उसे व्यापारिक कला की संज्ञा दी जा सकती है।

चित्रकला के तत्व :-

चित्रकला के तत्व निम्नलिखित हैं।

1. रेखा 2 रंग 3 रूप 4. तान 5. पोत
6. अन्तराल

रंगांकन (painting) :-

मानव के जीवन मे रंगो का महत्वपूर्ण स्थान है। रंग हमें आकर्षित करते हैं। प्रकृति के चित्रण और वास्तविक चित्रण के लिये हमें रंगो की आवश्यकता होती है। आज रंगो का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है। रंगो से सम्बंधित नये-2 प्रयोग किया जा रहा है। रंगांकन या रंजन के अन्तर्गत वर्ण के साथ-साथ शुद्ध अलंकरण रचना तथा विधि को भी समिलित किया जाता है।
रंग नियोजन निम्नलिखित तथ्यो पर आधारित है।

1) एकवर्णीय वर्ण नियोजन
2) द्विवर्णीय वर्ण नियोजन
3) बहुवर्णीय वर्ण नियोजन
4) वर्ण संगति

दृश्य कला के प्रकार (TYPES OF VISUAL ART)

दृश्य कला के प्रकार इस तरह है।

1) प्रतिनिधित्ववादी कला
2) अमूर्त कला (Representational Art)
3) गैर उद्देश्य कला (Non-objective Art)
4) क्रेयान कला (Crayan Art)

1. प्रतिनिधित्ववादी कला :-

प्रतिनिधित्ववादी कला का उद्देश्य वास्तविक वस्तुओ और विषये का प्रतिनिधित्व करना है। प्रतिनिधित्ववादी कला की उपश्रेणियो में यथार्थवाद प्रभाववाद आदर्शवाद शामिल है। प्रतिनिधित्व के इन सभी रूपों में वास्तविकता से वास्तविक विषयो का प्रतिनिधित्व होता है। कला के तीनों रूपों में प्रतिनिधित्ववादी कला सबसे पुराने है इसके माध्यम से पाषाण काल की मूर्तियो के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। हम आसानी से एक पेंटिंग, ड्राइंग, या मूर्ति की पहचान कर सकते है।

2. अमूर्त कला :-

अमूर्त कला को हमारे सामने इस तरह पेश किया जाता है कि

कि देखने मे वास्तविकता नजर आए। इसमें विषयों को बदलने का प्रयोग किया जा सकता है। बदलने के लिए बह, लाइने रंग आकार का प्रयोग किया जा सकता है अमूर्त कला में कलाकार अपने मन के भावों का चित्रण करता है।

3. गैर उद्देश्य कला :-

यह मूर्त कला से बिलकुल भिन्न है गैर उद्देश्य कला में वास्तविकता का प्रदर्शन नहीं होता है यह विशुद्ध रूप से सौन्दर्य का वर्णन करने के लिए बनाए गई है। इस कला का उद्देश्य यह है कि कला के तत्वों का व सिद्धान्तों का इस प्रकार प्रयोग करना है जिससे हमें दृश्य कला के अनुरूप परिणाम प्राप्त हो सके।

4. क्रेयान कला :-

क्रेयान कलाकृति मोम से बनाई जाती है। क्रेयान कि गई कई किस्में होती है जैसे मोम क्रेयान, pastel क्रेयान आदि। क्रेयान कलाकृति का उदाहरण बच्चों द्वारा बनाई गई व्यक्तिगत कलाकृतियों से

देखा जा सकता है।

दृश्य कला का शिक्षा में महत्व

दृश्य कला :- दृश्य कलाओं का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं बोध गम्य रूप से प्रस्तुत करने में किया जाता है शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए दृश्य कला की भूमिका को निम्न रूप में स्पष्ट किया जा सकता है।

1. **रुचिपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया :-** रुचिपूर्ण शिक्षण लिए आवश्यक है कि उसमें विभिन्न कलाओं का प्रयोग किया जाए।

2. **उच्च अधिगम स्तर :-** शिक्षण में विभिन्न कलाओं के प्रयोग से छात्रों का अधिगम स्तर भी उच्च होता है।

3. **छात्रों की क्रियाशीलता :-** शिक्षण में

University Roll No. .... Page No. 39

विभिन्न कलाओं के प्रयोग से छात्रों मे क्रियाशीलता का प्रादुर्भाव होता है। इस प्रादुर्भाव के कारण छात्र शारीरिक एवं मानसिक रूप से क्रियाशील होते है।

4. प्रयोग प्रदर्शन में महत्व :-

प्रयोग प्रदर्शन में भी सामान्य रूप से कलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

5. हस्त कौशलो का विकास :-

सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि छात्रों मे हस्त कौशलो का विकास कला शिक्षा के माध्यम से ही होता है।

6. सृजनात्मकता का विकास :-

कला का प्रयोग जब विभिन्न विषयों के शिक्षण में किया जाता है तो इससे बालकों में सृजनात्मकता क्षमता का विकास होता है।